



## उच्च शिक्षा में लैंगिक विषमताएँ

Dr. Renu Kureel

Associate professor department of Sociology

S.N.Sen B.V.P.G. College, Kanpur

### सारांश

भारत में उच्च शिक्षा का विस्तार तेजी से हुआ है, लेकिन महिलाओं और पुरुषों की भागीदारी हर स्तर, विषय और सामाजिक समूह में समान नहीं है। यह शोध-पत्र उच्च शिक्षा में मौजूद लैंगिक विषमताओं की प्रकृति, कारण, प्रभाव और सुधार के उपायों का समाजशास्त्रीय विश्लेषण करता है। अध्ययन मुख्यतः द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित है, जिनमें अखिल भारतीय उच्च शिक्षा सर्वेक्षण, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की वार्षिक रिपोर्ट, जनगणना संबंधी शिक्षा आँकड़े तथा विभिन्न सरकारी नीति-दस्तावेज शामिल हैं। उपलब्ध आँकड़ों के आधार पर उच्च शिक्षा में महिला भागीदारी, सकल नामांकन अनुपात, लैंगिक समानता सूचकांक तथा विषयवार भागीदारी की स्थिति का अध्ययन किया गया है। विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि महिलाओं की उच्च शिक्षा में उपस्थिति में उल्लेखनीय सुधार हुआ है, फिर भी तकनीकी, व्यावसायिक और शोध क्षेत्रों में असमानता बनी हुई है। आर्थिक कठिनाई, पारिवारिक अपेक्षाएँ, विवाह, सुरक्षा संबंधी चिंताएँ, भौगोलिक दूरी, सामाजिक रूढ़ियाँ और विषय चयन से जुड़ी धारणाएँ महिलाओं की उच्च शिक्षा तक पहुँच को प्रभावित करती हैं। अध्ययन का निष्कर्ष है कि केवल नामांकन बढ़ाना पर्याप्त नहीं है; वास्तविक लैंगिक समानता के लिए सुरक्षित शैक्षणिक वातावरण, छात्रवृत्ति, छात्रावास, डिजिटल पहुँच, करियर मार्गदर्शन, शोध अवसर और संवेदनशील संस्थागत व्यवस्था आवश्यक हैं।

**मुख्य शब्द:** उच्च शिक्षा, लैंगिक विषमता, महिला शिक्षा, नामांकन, समान अवसर, लैंगिक समानता सूचकांक, सामाजिक परिवर्तन।

### 1. प्रस्तावना

शिक्षा व्यक्ति के ज्ञान, कौशल, आत्मविश्वास और सामाजिक भागीदारी को बढ़ाने का सबसे प्रभावी माध्यम है। उच्च शिक्षा का महत्व इसलिए और बढ़ जाता है क्योंकि विश्वविद्यालय और महाविद्यालय केवल डिग्री प्रदान नहीं करते, बल्कि रोजगार, नेतृत्व, शोध, नवाचार और सामाजिक गतिशीलता के अवसर भी उपलब्ध कराते हैं। यदि महिलाओं और पुरुषों को उच्च शिक्षा में समान अवसर नहीं मिलते, तो समाज की आधी आबादी की प्रतिभा का

पूरा उपयोग नहीं हो पाता। इसलिए उच्च शिक्षा में लैंगिक समानता सामाजिक न्याय, आर्थिक विकास और लोकतांत्रिक भागीदारी से सीधे जुड़ा प्रश्न है।

भारत में स्वतंत्रता के बाद महिला शिक्षा की स्थिति में निरंतर सुधार हुआ। विद्यालयों और महाविद्यालयों की संख्या बढ़ी, छात्रवृत्तियाँ शुरू हुईं और महिलाओं के लिए विशेष योजनाएँ लागू की गईं। इसके बावजूद उच्च शिक्षा में समानता केवल कुल नामांकन से नहीं मापी जा सकती। यह देखना आवश्यक है कि महिलाएँ किन विषयों में प्रवेश ले रही हैं, कितनी छात्राएँ तकनीकी और व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में पहुँच रही हैं, शोध स्तर पर उनकी भागीदारी कैसी है, ग्रामीण और कमजोर वर्गों की महिलाओं के लिए अवसर कितने उपलब्ध हैं तथा पढ़ाई पूरी करने के बाद उन्हें रोजगार और शैक्षणिक नेतृत्व के अवसर कितने मिलते हैं।

लैंगिक विषमता का अर्थ केवल महिलाओं की संख्या कम होना नहीं है। यह संसाधनों, अवसरों, निर्णय लेने की शक्ति, विषय चयन, संस्थागत वातावरण और भविष्य की प्रगति में असमानता को भी दर्शाता है। कई बार किसी पाठ्यक्रम में महिलाओं की संख्या अधिक होती है, फिर भी प्रतिष्ठित पदों, शोध परियोजनाओं, तकनीकी क्षेत्रों या नेतृत्व में उनकी उपस्थिति कम रहती है। इस अध्ययन में इसी व्यापक दृष्टि से उच्च शिक्षा में लैंगिक विषमताओं को समझने का प्रयास किया गया है।

## 2. अध्ययन की आवश्यकता और समस्या का स्वरूप

उच्च शिक्षा में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाना सकारात्मक परिवर्तन है, पर राष्ट्रीय स्तर का औसत क्षेत्रीय और सामाजिक असमानताओं को छिपा सकता है। बड़े शहरों में कॉलेजों की उपलब्धता, परिवहन, इंटरनेट, छात्रावास और रोजगार से जुड़ी जानकारी अपेक्षाकृत अधिक होती है, जबकि दूरस्थ और ग्रामीण क्षेत्रों में छात्राओं को संस्थान तक पहुँचने के लिए लंबी दूरी तय करनी पड़ सकती है। परिवार की आर्थिक स्थिति कमजोर होने पर सीमित संसाधन अक्सर बेटे की उच्च शिक्षा पर खर्च किए जाते हैं, क्योंकि पारंपरिक सोच में लड़के को भविष्य का कमाने वाला सदस्य माना जाता है।

विषमता विषय चयन में भी दिखाई देती है। कला, शिक्षा और कुछ सामान्य पाठ्यक्रमों में महिलाओं की भागीदारी अपेक्षाकृत अधिक हो सकती है, जबकि अभियंत्रण, प्रौद्योगिकी, प्रबंधन और कुछ व्यावसायिक क्षेत्रों में पुरुषों की संख्या अधिक रहती है। ऐसी स्थिति केवल व्यक्तिगत रुचि का परिणाम नहीं होती; बचपन से मिलने वाली सामाजिक धारणाएँ, विज्ञान और गणित से जुड़ी रूढ़ियाँ, परिवार की अपेक्षाएँ, महिला आदर्श व्यक्तियों की कमी तथा रोजगार स्थल की कल्पना भी निर्णय को प्रभावित करती है। अतः समस्या का अध्ययन केवल प्रवेश संख्या नहीं, बल्कि अवसर की पूरी श्रृंखला को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए।

### 3. अध्ययन के उद्देश्य

- उच्च शिक्षा में महिलाओं और पुरुषों की भागीदारी की स्थिति का अध्ययन करना।
- नामांकन, पाठ्यक्रम और शोध स्तर पर दिखाई देने वाली प्रमुख लैंगिक विषमताओं को पहचानना।
- आर्थिक, सामाजिक, पारिवारिक और संस्थागत कारणों का विश्लेषण करना।
- लैंगिक विषमता के व्यक्तिगत तथा सामाजिक प्रभावों को स्पष्ट करना।
- उच्च शिक्षा में अधिक समानता लाने के लिए व्यावहारिक सुझाव प्रस्तुत करना।

### 4. शोध पद्धति

यह अध्ययन वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक प्रकृति का है। इसमें प्राथमिक सर्वेक्षण के स्थान पर द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है। प्रमुख आँकड़े अखिल भारतीय उच्च शिक्षा सर्वेक्षण 2016-17, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के वार्षिक प्रतिवेदन, भारत की जनगणना तथा शिक्षा और महिला सशक्तिकरण से संबंधित सरकारी दस्तावेजों से लिए गए हैं। उपलब्ध आँकड़ों को सरल प्रतिशत, अनुपात और तुलनात्मक तालिकाओं के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है।

अध्ययन की सीमा यह है कि राष्ट्रीय औसत से प्रत्येक राज्य, जातीय समूह, ग्रामीण-शहरी क्षेत्र या संस्थान की वास्तविक स्थिति पूरी तरह स्पष्ट नहीं होती। इसके अतिरिक्त नामांकन बढ़ना स्वतः समान अनुभव, समान उपलब्धि या समान रोजगार का प्रमाण नहीं है। इसलिए यहाँ आँकड़ों के साथ सामाजिक और संस्थागत संदर्भ का भी विश्लेषण किया गया है।

### 5. उच्च शिक्षा में लैंगिक स्थिति: आँकड़ों का विश्लेषण

उच्च शिक्षा में महिलाओं की भागीदारी पिछले कुछ वर्षों में लगातार बढ़ी है, लेकिन पुरुषों और महिलाओं के बीच पूर्ण समानता अभी प्राप्त नहीं हुई है। उपलब्ध आँकड़े बताते हैं कि उच्च शिक्षा में महिला नामांकन में महत्वपूर्ण सुधार हुआ है और महिलाओं की भागीदारी कुल नामांकन के लगभग आधे तक पहुँच गई है। हालांकि, विषयों, पाठ्यक्रमों और उच्च शैक्षणिक स्तरों पर लैंगिक अंतर अभी भी दिखाई देता है।

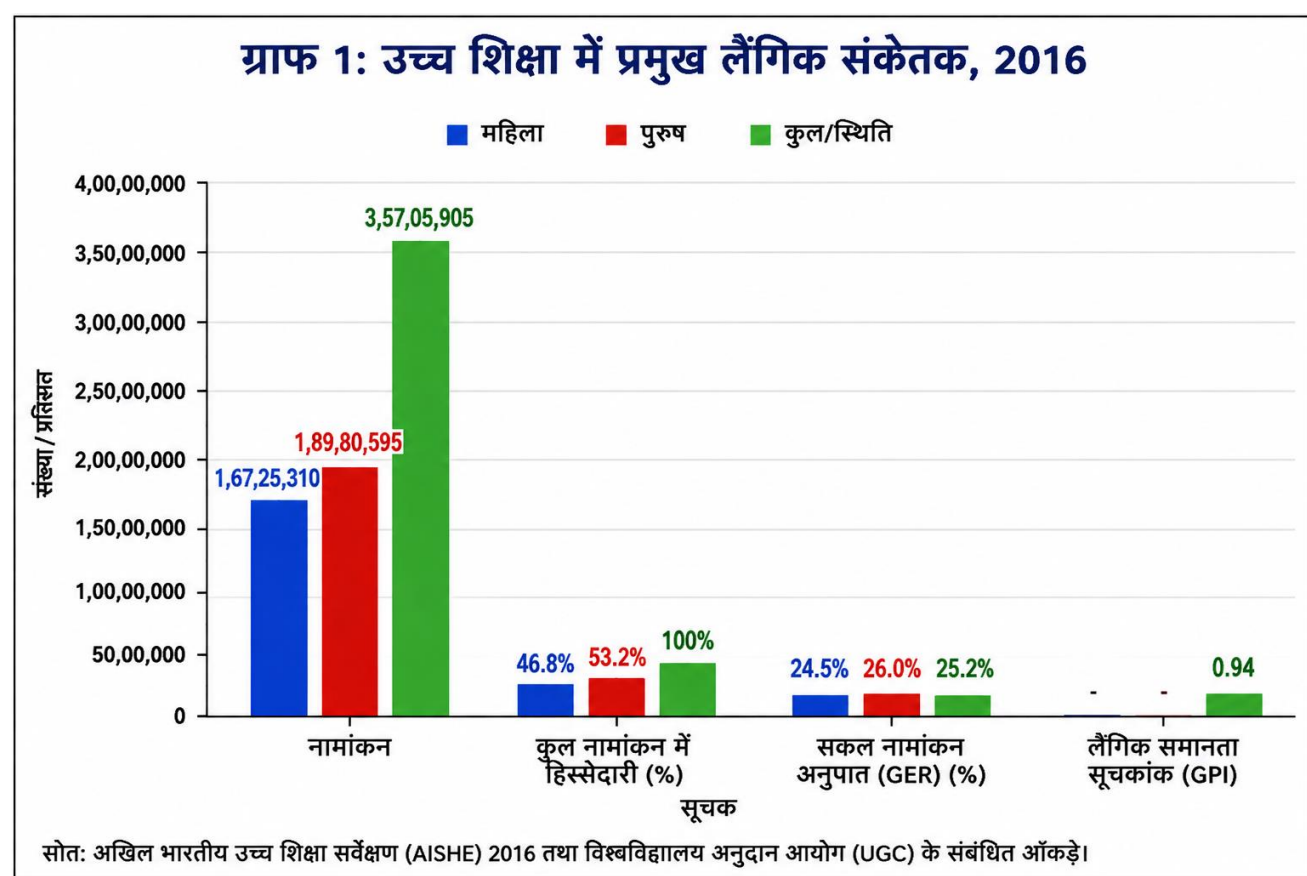
उच्च शिक्षा पर उपलब्ध आँकड़ों के अनुसार, कुल नामांकन 3,57,05,905 था, जिसमें 1,67,25,310 महिला छात्राएँ और 1,89,80,595 पुरुष छात्र शामिल थे। कुल नामांकन में महिलाओं की हिस्सेदारी 46.8 प्रतिशत और पुरुषों की हिस्सेदारी 53.2 प्रतिशत थी। इसी अवधि में उच्च शिक्षा का कुल सकल नामांकन अनुपात (GER) 25.2 प्रतिशत था, जिसमें पुरुषों का GER 26.0 प्रतिशत और महिलाओं का GER 24.5 प्रतिशत दर्ज किया गया। लैंगिक

समानता सूचकांक (Gender Parity Index) 0.94 था, जो यह दर्शाता है कि उच्च शिक्षा में महिला और पुरुष भागीदारी के बीच अंतर काफी कम हुआ है, लेकिन पूर्ण समानता अभी प्राप्त नहीं हुई थी।

**तालिका 1: उच्च शिक्षा में प्रमुख लैंगिक संकेतक, 2016**

| सूचक                       | महिला       | पुरुष       | कुल/स्थिति  |
|----------------------------|-------------|-------------|-------------|
| नामांकन                    | 1,67,25,310 | 1,89,80,595 | 3,57,05,905 |
| कुल नामांकन में हिस्सेदारी | 46.8%       | 53.2%       | 100%        |
| सकल नामांकन अनुपात         | 24.5%       | 26.0%       | 25.2%       |
| लैंगिक समानता सूचकांक      | —           | —           | 0.94        |

स्रोत: अखिल भारतीय उच्च शिक्षा सर्वेक्षण 2016 तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के संबंधित आँकड़े।



तालिका से स्पष्ट है कि कुल भागीदारी में अंतर बहुत बड़ा नहीं था, फिर भी पुरुष नामांकन लगभग 22.55 लाख अधिक था। इसका अर्थ है कि महिलाओं की पहुँच में उल्लेखनीय प्रगति हुई, लेकिन बराबरी अभी प्रक्रिया में

थी। साथ ही राष्ट्रीय स्तर का 46.8 प्रतिशत महिला नामांकन यह नहीं बताता कि सभी पाठ्यक्रमों में समान स्थिति थी। स्तर और विषय के अनुसार अंतर कहीं अधिक स्पष्ट था।

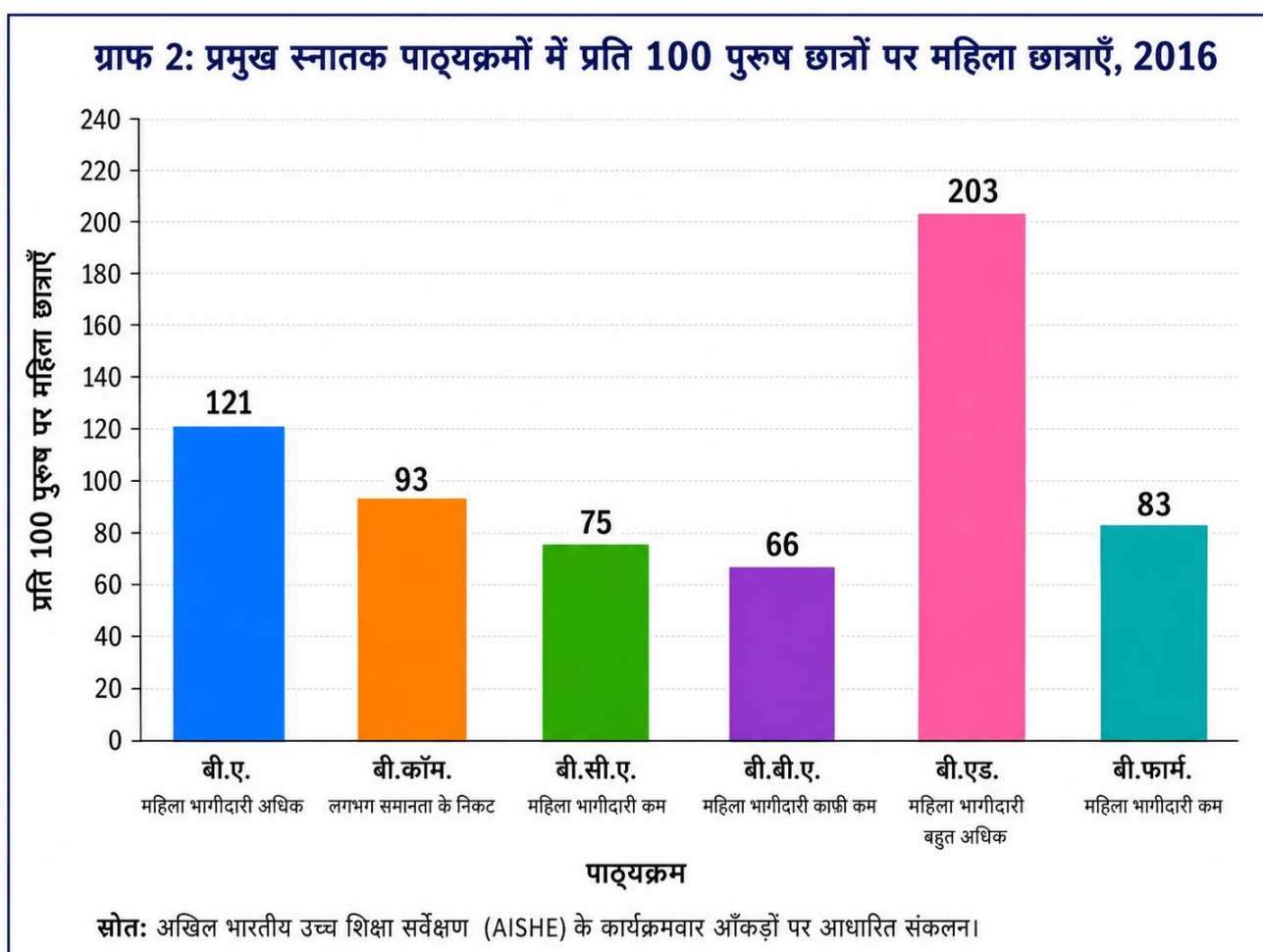
## 6. पाठ्यक्रम और स्तर के अनुसार विषमता

विभिन्न पाठ्यक्रमों में महिलाओं की भागीदारी का स्वरूप अलग था। सामान्य कला और शिक्षक शिक्षा जैसे क्षेत्रों में महिलाओं की उपस्थिति अधिक दिखाई देती है, जबकि कंप्यूटर अनुप्रयोग, व्यवसाय प्रशासन, अभियंत्रण और कई तकनीकी पाठ्यक्रमों में पुरुषों का दबदबा अधिक था। उदाहरण के लिए 2016 में नियमित बी.ए. पाठ्यक्रम में प्रत्येक 100 पुरुष छात्रों पर लगभग 121 महिला छात्राएँ थीं, जबकि बी.सी.ए. में यह संख्या लगभग 75 और बी.बी.ए. में लगभग 66 थी। बी.एड. में महिलाओं की भागीदारी बहुत अधिक थी। यह अंतर बताता है कि लैंगिक विषमता केवल शिक्षा तक पहुँच की नहीं, बल्कि विषयगत विभाजन की भी समस्या है।

**तालिका 2: प्रमुख स्नातक पाठ्यक्रमों में प्रति 100 पुरुष छात्रों पर महिला छात्राएँ, 2016**

| पाठ्यक्रम | प्रति 100 पुरुष पर महिलाएँ | संक्षिप्त संकेत          |
|-----------|----------------------------|--------------------------|
| बी.ए.     | 121                        | महिला भागीदारी अधिक      |
| बी.कॉम.   | 93                         | लगभग समानता के निकट      |
| बी.सी.ए.  | 75                         | महिला भागीदारी कम        |
| बी.बी.ए.  | 66                         | महिला भागीदारी काफी कम   |
| बी.एड.    | 203                        | महिला भागीदारी बहुत अधिक |
| बी.फार्म. | 83                         | महिला भागीदारी कम        |

**स्रोत:** अखिल भारतीय उच्च शिक्षा सर्वेक्षण की कार्यक्रमवार समय-श्रृंखला पर आधारित संकलन।



शोध स्तर पर भी अंतर दिखाई देता है। विश्वविद्यालय और उसके घटक संस्थानों के उपलब्ध आँकड़ों में 2016 के दौरान पीएच.डी. स्तर पर पुरुषों की संख्या महिलाओं से अधिक थी, जबकि एम.फिल. और स्नातकोत्तर स्तर पर कई स्थानों पर महिलाओं की भागीदारी बेहतर थी। इससे पता चलता है कि उच्च शिक्षा में प्रवेश करने के बाद भी शोध की लंबी अवधि, आर्थिक अनिश्चितता, विवाह और परिवार की जिम्मेदारियाँ तथा शोध अवसरों तक पहुँच महिलाओं की आगे की प्रगति को प्रभावित कर सकती हैं।

### 6.1 ग्रामीण, सामाजिक और क्षेत्रीय आयाम

लैंगिक विषमता सभी महिलाओं को एक समान रूप से प्रभावित नहीं करती। ग्रामीण क्षेत्र की छात्रा, आर्थिक रूप से कमजोर परिवार की छात्रा, अनुसूचित जाति या अनुसूचित जनजाति से आने वाली छात्रा और दूरस्थ क्षेत्र में रहने वाली छात्रा को एक साथ कई बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है। यदि निकट में महाविद्यालय न हो, परिवहन नियमित न हो और परिवार की आय सीमित हो, तो उच्च शिक्षा में प्रवेश लेना कठिन हो जाता है। ऐसी परिस्थितियों में केवल सीटों की उपलब्धता पर्याप्त नहीं होती; वास्तविक पहुँच के लिए यात्रा, छात्रावास, छात्रवृत्ति और शैक्षणिक सहायता भी जरूरी होती है।

राज्यों और जिलों के बीच उच्च शिक्षण संस्थानों की संख्या तथा उनकी गुणवत्ता में भी अंतर पाया जाता है। बड़े शहरी केंद्रों में विषयों के अधिक विकल्प होते हैं, जबकि छोटे शहरों में छात्राओं को उपलब्ध पाठ्यक्रम में ही प्रवेश लेना पड़ सकता है। इससे उनकी रुचि के अनुसार विषय चुनने की स्वतंत्रता घटती है। इसलिए लैंगिक समानता की नीति बनाते समय महिला वर्ग को एक समान समूह मानने के बजाय क्षेत्र, सामाजिक पृष्ठभूमि, आर्थिक स्थिति और परिवार की परिस्थितियों को साथ देखकर सहायता योजना तैयार करनी चाहिए।

## 7. लैंगिक विषमताओं के प्रमुख कारण

### 7.1 आर्थिक कारण

उच्च शिक्षा पर शुल्क, पुस्तकें, परिवहन, किराया, छात्रावास, डिजिटल उपकरण और अन्य खर्च होते हैं। कम आय वाले परिवारों में यदि सभी बच्चों की उच्च शिक्षा का खर्च उठाना कठिन हो, तो बेटों को प्राथमिकता मिलने की संभावना बढ़ जाती है। यह अंतर विशेष रूप से निजी, तकनीकी और व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में दिखाई दे सकता है, क्योंकि उनकी लागत सामान्य पाठ्यक्रमों की तुलना में अधिक होती है। छात्रवृत्ति और कम शुल्क वाली संस्थाएँ इस बाधा को कम कर सकती हैं।

### 7.2 सामाजिक और पारिवारिक मान्यताएँ

कई परिवारों में लड़की की शिक्षा को विवाह से पहले की सीमित अवधि से जोड़कर देखा जाता है। यह सोच कि लड़की को बहुत दूर पढ़ने के लिए भेजना उचित नहीं है, या अधिक शिक्षा विवाह में कठिनाई पैदा कर सकती है, उसके विकल्पों को सीमित करती है। घरेलू कार्य, छोटे भाई-बहनों की देखभाल और परिवार की देखभाल का भार भी अक्सर लड़कियों पर अधिक होता है। ऐसी जिम्मेदारियाँ नियमित उपस्थिति, परीक्षा की तैयारी और शोध जैसे लंबे कार्यक्रमों में बने रहने को कठिन बना सकती हैं।

### 7.3 सुरक्षा, दूरी और परिवहन

महाविद्यालय या विश्वविद्यालय घर से दूर होने पर सुरक्षित सार्वजनिक परिवहन और छात्रावास बहुत महत्वपूर्ण हो जाते हैं। असुरक्षित यात्रा, देर शाम की कक्षाएँ, परिसर के आसपास अपर्याप्त रोशनी तथा उत्पीड़न का डर परिवारों के निर्णय को प्रभावित करता है। कई छात्राएँ अपनी पसंद का विषय छोड़कर निकट के संस्थान में उपलब्ध पाठ्यक्रम चुनती हैं। इस प्रकार सुरक्षा की समस्या सीधे विषय चयन और संस्थान चयन को प्रभावित करती है।

### 7.4 विषय चयन से जुड़ी रूढ़ियाँ

समाज में अभी भी यह धारणा मिलती है कि कुछ विषय महिलाओं के लिए और कुछ पुरुषों के लिए अधिक उपयुक्त हैं। अध्यापन, कला और देखभाल से जुड़े क्षेत्रों को महिलाओं से जोड़ा जाता है, जबकि अभियंत्रण, मशीन,

प्रौद्योगिकी और नेतृत्व से जुड़े क्षेत्रों को पुरुषों से जोड़ने की प्रवृत्ति देखी जाती है। विद्यालय स्तर पर मार्गदर्शन और महिला वैज्ञानिकों, अभियंताओं तथा प्रशासकों के उदाहरण कम मिलने पर छात्राओं का आत्मविश्वास प्रभावित हो सकता है।

### 7.5 संस्थागत वातावरण और अवसर

केवल प्रवेश देना पर्याप्त नहीं है। परिसर में लैंगिक संवेदनशीलता, शिकायत निवारण व्यवस्था, स्वच्छ शौचालय, छात्रावास, पुस्तकालय की सुरक्षित समय-सारणी, मातृत्व संबंधी सुविधा, शोध मार्गदर्शन और समान अवसर भी महत्वपूर्ण हैं। यदि निर्णय लेने वाली समितियों, वरिष्ठ अध्यापकों और नेतृत्व पदों पर महिलाएँ कम हों, तो छात्राओं को मार्गदर्शक और आदर्श व्यक्तित्व कम मिलते हैं। संस्थागत संस्कृति में सूक्ष्म पक्षपात भी छात्राओं की भागीदारी और आत्मविश्वास को प्रभावित कर सकता है।

### 8. लैंगिक विषमता के प्रभाव

उच्च शिक्षा में लैंगिक विषमता का प्रभाव केवल छात्रा के जीवन तक सीमित नहीं रहता। कम शिक्षा से रोजगार के अवसर, आय, आर्थिक स्वतंत्रता और निर्णय लेने की क्षमता सीमित हो सकती है। इसके विपरीत उच्च शिक्षा प्राप्त महिला परिवार के स्वास्थ्य, बच्चों की शिक्षा, आर्थिक योजना और सामाजिक भागीदारी में सकारात्मक भूमिका निभा सकती है। शिक्षित महिलाओं की श्रम बाजार में अधिक भागीदारी राष्ट्रीय उत्पादकता और आय में भी योगदान करती है।

विषयगत विषमता का प्रभाव भविष्य के कार्यबल पर पड़ता है। यदि तकनीकी और वैज्ञानिक क्षेत्रों में महिलाएँ कम हों, तो अनुसंधान और नवाचार में विविध दृष्टिकोण कम हो जाते हैं। इसी प्रकार यदि महिलाएँ बड़ी संख्या में कुछ सीमित क्षेत्रों में केंद्रित रहें, तो रोजगार बाजार में प्रतिस्पर्धा और वेतन संबंधी असमानताएँ बनी रह सकती हैं। इसलिए समानता का लक्ष्य केवल अधिक महिला नामांकन नहीं, बल्कि सभी क्षेत्रों में वास्तविक विकल्प और प्रगति का अवसर होना चाहिए।

### 9. सरकारी और संस्थागत प्रयास

महिला शिक्षा को बढ़ाने के लिए सरकार और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा छात्रवृत्ति, महिला छात्रावास, एकल बालिका के लिए सहायता, महिला शोधार्थियों के लिए फैलोशिप, महिला अध्ययन केंद्र तथा समान अवसर से जुड़ी योजनाएँ संचालित की गईं। बारहवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान पहुँच, समानता और गुणवत्ता को उच्च शिक्षा के महत्वपूर्ण लक्ष्यों के रूप में रखा गया। विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में महिला छात्रावास की उपलब्धता विशेष रूप से उन छात्राओं के लिए उपयोगी है जो ग्रामीण या दूरस्थ क्षेत्रों से आती हैं।

ऐसी योजनाओं का प्रभाव तभी बढ़ता है जब जानकारी समय पर छात्राओं तक पहुँचे और आवेदन प्रक्रिया सरल हो। कई पात्र छात्राएँ जानकारी के अभाव में छात्रवृत्ति या अन्य सहायता का लाभ नहीं ले पातीं। इसलिए महाविद्यालय स्तर पर सहायता कक्ष, परामर्श, छात्रवृत्ति सूचना, करियर मार्गदर्शन और उत्पीड़न विरोधी तंत्र को सक्रिय रखना आवश्यक है। नीति का लाभ केवल कागज पर नहीं, बल्कि छात्रा के वास्तविक शैक्षणिक अनुभव में दिखाई देना चाहिए।

## 10. सुधार हेतु सुझाव

- ग्रामीण और दूरस्थ क्षेत्रों में गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षण संस्थानों की पहुँच बढ़ाई जाए तथा सुरक्षित परिवहन की व्यवस्था की जाए।
- आर्थिक रूप से कमजोर छात्राओं के लिए शुल्क सहायता, छात्रवृत्ति, पुस्तक सहायता और डिजिटल उपकरण उपलब्ध कराए जाएँ।
- महिला छात्रावासों की संख्या, गुणवत्ता और सुरक्षा बढ़ाई जाए, ताकि दूरी के कारण छात्राएँ अपनी पसंद का पाठ्यक्रम न छोड़ें।
- विद्यालय से ही विज्ञान, गणित, प्रौद्योगिकी, प्रबंधन और शोध क्षेत्रों में छात्राओं को करियर मार्गदर्शन दिया जाए।
- महिला वैज्ञानिकों, तकनीकी विशेषज्ञों, उद्यमियों और शिक्षाविदों के साथ मार्गदर्शन कार्यक्रम चलाए जाएँ।
- कॉलेज और विश्वविद्यालय में लैंगिक उत्पीड़न की शिकायतों के लिए गोपनीय, समयबद्ध और विश्वसनीय व्यवस्था हो।
- विषयवार, सामाजिक समूहवार, ग्रामीण-शहरी और स्तरवार लैंगिक आँकड़ों का नियमित विश्लेषण किया जाए।
- शोधार्थी महिलाओं के लिए लचीली शैक्षणिक व्यवस्था, शोध अनुदान और आवश्यकतानुसार पारिवारिक सहायता संबंधी प्रावधान विकसित किए जाएँ।
- शिक्षक और प्रशासकों के लिए लैंगिक संवेदनशीलता प्रशिक्षण को नियमित संस्थागत गतिविधि बनाया जाए।
- महिला भागीदारी को केवल प्रवेश तक सीमित न रखते हुए पाठ्यक्रम पूर्णता, रोजगार, शोध, पदोन्नति और नेतृत्व तक मापा जाए।

## 11. निष्कर्ष

भारत में उच्च शिक्षा के विस्तार के साथ महिलाओं की भागीदारी में महत्वपूर्ण सुधार हुआ है। 2016-17 में महिला नामांकन 1.67 करोड़ से अधिक था और लैंगिक समानता सूचकांक 0.94 तक पहुँच गया था। यह परिवर्तन बताता है कि शिक्षा के प्रति परिवारों और समाज की सोच बदली है तथा सरकारी प्रयासों ने भी अवसर बढ़ाए हैं।

फिर भी कुल आँकड़े पूर्ण समानता का प्रमाण नहीं हैं। तकनीकी और कुछ व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में महिलाओं की कम भागीदारी, शोध स्तर पर अंतर, सुरक्षा और दूरी की समस्या, आर्थिक बाधाएँ, घरेलू जिम्मेदारियाँ और सामाजिक रूढ़ियाँ अभी भी महत्वपूर्ण चुनौतियाँ हैं।

अतः उच्च शिक्षा में लैंगिक समानता का लक्ष्य केवल यह नहीं होना चाहिए कि महिलाओं की संख्या पुरुषों के बराबर हो जाए। वास्तविक समानता तब होगी जब प्रत्येक छात्रा अपनी रुचि और योग्यता के अनुसार विषय, संस्थान और करियर चुन सके; उसे सुरक्षित वातावरण, आर्थिक सहायता, गुणवत्तापूर्ण मार्गदर्शन और आगे बढ़ने के समान अवसर मिलें। परिवार, समाज, सरकार और शैक्षणिक संस्थानों की संयुक्त जिम्मेदारी है कि उच्च शिक्षा को महिलाओं के लिए सुलभ ही नहीं, बल्कि समान, सुरक्षित और सशक्त बनाने वाला अनुभव बनाया जाए।

### संदर्भ

1. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद। (2005)। *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2005: शिक्षा में समानता और लैंगिक संवेदनशीलता*। नई दिल्ली: एनसीईआरटी।
2. भारत सरकार, मानव संसाधन विकास मंत्रालय। (2005)। *शिक्षा में लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण संबंधी रिपोर्ट*। नई दिल्ली: भारत सरकार।
3. विश्व बैंक। (2007)। *भारत में लैंगिक समानता, शिक्षा और विकास: सामाजिक परिवर्तन की दिशा में प्रयास*। वाशिंगटन डी.सी.: विश्व बैंक।
4. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग। (2008)। *उच्च शिक्षा में समान अवसर और महिला भागीदारी संबंधी रिपोर्ट*। नई दिल्ली: विश्वविद्यालय अनुदान आयोग।
5. भारत सरकार, महिला एवं बाल विकास मंत्रालय। (2008)। *महिलाओं के सशक्तिकरण हेतु राष्ट्रीय नीति: प्रगति रिपोर्ट*। नई दिल्ली: भारत सरकार।
6. सेन, अमर्त्य। (2009)। *द आइडिया ऑफ जस्टिस*। नई दिल्ली: पेंगुइन बुक्स इंडिया।

7. भारत सरकार, योजना आयोग। (2011)। *ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना (2007-2012): शिक्षा और सामाजिक क्षेत्र का विकास* नई दिल्ली: भारत सरकार।
8. भारत के महापंजीयक एवं जनगणना आयुक्त। (2011)। *भारत की जनगणना 2011: शिक्षा एवं साक्षरता संबंधी आँकड़ें* नई दिल्ली: भारत सरकार।
9. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग। (2011)। *उच्च शिक्षा में महिला भागीदारी और समान अवसर संबंधी वार्षिक रिपोर्ट* नई दिल्ली: विश्वविद्यालय अनुदान आयोग।
10. भारत सरकार, मानव संसाधन विकास मंत्रालय। (2012)। *बारहवीं पंचवर्षीय योजना (2012-2017): शिक्षा, कौशल विकास और समानता* नई दिल्ली: भारत सरकार।
11. भारत सरकार, मानव संसाधन विकास मंत्रालय। (2013)। *उच्च शिक्षा पर अखिल भारतीय सर्वेक्षण (AISHE) 2011-12 रिपोर्ट* नई दिल्ली: उच्च शिक्षा विभाग।
12. भारत सरकार, मानव संसाधन विकास मंत्रालय। (2014)। *उच्च शिक्षा पर अखिल भारतीय सर्वेक्षण (AISHE) 2012-13 रिपोर्ट* नई दिल्ली: उच्च शिक्षा विभाग।
13. भारत सरकार, मानव संसाधन विकास मंत्रालय। (2015)। *उच्च शिक्षा पर अखिल भारतीय सर्वेक्षण (AISHE) 2013-14 रिपोर्ट* नई दिल्ली: उच्च शिक्षा विभाग।
14. यूनेस्को। (2015)। *ईएफए वैश्विक निगरानी रिपोर्ट: शिक्षा और लैंगिक समानता* पेरिस: यूनेस्को।
15. ड्रेज़, जॉ, एवं सेन, अमर्त्य। (2013)। *भारत: एक असमान देश में विकास और लोकतंत्र* नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।